अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 30 जून, 2013)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) आचार का सार है -

(क) अनुयोग (ख) प्ररूपणा

(ग) चारित्र (घ) निर्वाण ( )

(b) आचारांग के चौथे अध्ययन का नाम है -

(क) लोक विजय (ख) सम्यक्त्व

(ग) धूत (घ) विमोक्ष ( )

(c) आचारांग सूत्र में कुल अध्ययन हैं -

(क) 16 (ख) 09

(ग) 85 (घ) 25 ( )

(d) राजा प्रदेशी किस नगरी का अधिपति था -

(क) राजगृही (ख) श्वेताम्बिका

(ग) वैशाली (घ) चम्पा ( )

(e) संवर के संक्षेप में भेद होते हैं -

(क) 07 (ख) 69

(ग) 20 (घ) 05 ( )

(f) प्रज्ञा परीषह किस कर्म के कारण होता है -

(क) अन्तराय (ख) मोहनीय

(ग) ज्ञानावरणीय (घ) दर्शनावरणीय ( )

(g) वितर्क से तात्पर्य है -

(क) विचार (ख) संकल्प

(ग) विकल्प (घ) श्रुत ( )

(h) देवगति में समुच्चय बन्ध होता है -

(क) 104 (ख) 103

(ग) 101 (घ) 97 ( )

(i) कार्मण काययोग में गुणस्थान पाये जाते हैं -

(क) 1,2,4 (ख) 1,2,3

(ग) 1,2,4,13 (घ) 1,2,4,13,14 ( )

(j) देस इला = देसेला में सन्धि है -

(क) असमान स्वर संधि (ख) लोप संधि

(ग) अव्यय संधि (घ) दीर्घ संधि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1=(10)

(a) आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम नव ब्रह्मचर्य है। ( )

(b) आचारांग सूत्र में कुल 341 सूत्र हैं। ( )

(c) वास्तविक स्व-अस्तित्व का विस्मरण ही मूर्च्छा है। ( )

(d) जीव और शरीर एक है। ( )

(e) 'पराघात' मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृति है। ( )

(f) सम्यक्त्व मोहनीय पाप प्रकृति है। ( )

(g) शीतल शरीर में शीत प्रकाश का नियामक कर्म, उद्योत है। ( )

(h) जाति चौक प्रायोग्य बन्ध मिथ्यात्व गुणस्थान तक ही होता है। ( )

(i) आहारद्विक का बन्ध संयम सापेक्ष है। ( )

(j) प्राकृत में प्रायः व्यंजन संधि का अभाव है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) अंग साहित्य में मेरा सर्वप्रथम स्थान है। .....

(b) मैं शाश्वत धर्म हूँ। .....

(c) मैं आचारांग की एक चूलिका हूँ, मुझमें वीतराग स्वरूप का वर्णन है। .....

(d) मैं राजा प्रदेशी का सारथी हूँ। .....

(e) मैं दर्शन या वाणी से दूसरों को पराजित करने वाला कर्म हूँ। .....

(f) मैं नवदीक्षित अध्ययनशील साधु हूँ। .....

(g) मैं स्वभावतः उर्ध्वगतिशील हूँ। .....

(h) मैं एक ऐसी समकित हूँ जिसमें किसी भी आयु का बन्ध नहीं होता है। .....

(i) मैं एक ऐसा कर्म हूँ, जिसका बन्ध सम्यक्त्व होने पर
4 से 8 गुणस्थान में होता है। .....

(j) मैं एक ऐसा शब्द हूँ, जिसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है,
सदा एक सा रहता है। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a)	विण्णाता	-	वामन	.....
(b)	आणाए	-	उद्योत	.....
(c)	मेहावी	-	औदारिक द्विक	.....
(d)	संहनन	-	टपकना	.....
(e)	विपाक	-	कीलिका	.....
(f)	संस्थान	-	आज्ञा में	.....
(g)	सूर्यकान्ता	-	विज्ञाता	.....
(h)	चुउ	-	मेधावी	.....
(i)	उरलदुग	-	अनुभाव	.....
(j)	उज्जोय	-	प्रदेशी	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :- **12x2=(24)**

(a) **आचारांग को आचाल अथवा आमोक्ख क्यों कहते हैं ?**

.....

.....

(b) **'पणया वीरा महावीहिं' अथवा 'कामा दुरतिक्कमा' सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(c) **'णो लोगस्सेसणं चरे' अथवा 'उट्ठिते णो पमादए' सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(d) **कर्म योग्य पुद्गलों को कौन ग्रहण करता है ?**

अथवा

प्रमाद किसे कहते हैं ?

.....

.....

(e) **शुभ अथवा सुभग नाम कर्म किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(f) **मोहनीय अथवा नाम कर्म की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।**

.....

.....

(g) **गुप्ति अथवा समिति की परिभाषा लिखिए।**

.....

.....

(h) **विनय अथवा स्वाध्याय के भेद लिखिए।**

.....

.....

(i) **स यथानाम अथवा शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम् सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(j) **पाँच अनुत्तर विमान अथवा लब्धि अपर्याप्त मनुष्य का बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

.....

.....

(k) **अवधिज्ञान अथवा मनःपर्याय ज्ञान में गुणस्थान एवं समुच्चय बन्ध लिखिए।**

.....

.....

(l) **अनाहारक में कौन-कौनसे गुणस्थान पाये जाते हैं ?**

अथवा

उपशम समकित में कौन-कौनसे गुणस्थान पाये जाते है ?

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :- **12x3=(36)**

(a) **'जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया विजहित्ता विसोत्तियं ', सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए।**

अथवा

'जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे', सूत्र का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(b) **'जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे'।**

अथवा

अरतिं आउट्टे से मेधावी खणंमि मुक्के, सूत्र का आशय लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(c) **'णो हीणे णो अत्तिरिते '**

अथवा

उद्देसो पासगस्स णत्थि। सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

(d) **'सच्चंसि धितिं कुव्वह '**

अथवा

'णेव से अंतो णेव से दूरे'। सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(e) **किन कारणो से देवलोक में उत्पन्न देव, मनुष्य लोक में नहीं आते हैं ?**

अथवा

किन कारणों से नरक में उत्पन्न जीव, मनुष्य लोक में आने के इच्छुक होते हुए भी नहीं आ पाते हैं ?

.....

.....

.....

.....

(f) **प्रत्येक कर्म की जघन्य स्थिति के अधिकारी कौन हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **क्षमा की साधना के पाँच उपाय लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **राजा प्रदेशी का जीव और शरीर की भिन्नता के विषय में क्या प्रश्न था, केशी श्रमण ने उसका क्या समाधान किया ?**

.....

.....

.....

.....

(i) **वैक्रिय मिश्र अथवा औदारिक मिश्र काय योग का बन्ध स्वामित्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(j) भवनपति देव अथवा सातवीं नरक का बन्ध स्वामित्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(k) निम्न में से दो वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए -

1. सीता की माता जागी। .....
2. सर्वज्ञों का तेज प्रकट होता है। .....
3. राजा का पुत्र हँसता है। .....

(l) निम्न शब्दों का संधि-विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए । (कोई 2)

1. सव्वोदय, 2. नरेसर, 3. तुज्झत्थ।

.....

.....

.....

.....